निर्णायकः जो सुसमाचार की माँग है

सुसमाचार निर्णायक त्याग की माँग करता है

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ लूका 14 निकालें। पिछले सन्देश के आधार पर मैं कुछ बातें आपसे कहना चाहता हूँ। आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि डेविड क्या सोच रहा है या डेविड क्या कहने वाला है। हर सप्ताह आपके सामने मेरी जिम्मेदारी यह प्रकट करना नहीं है कि मैं क्या सोच रहा हूँ या क्या कहना चाहता हूँ।

मेरी जिम्मेदारी आपके सामने यह प्रकट करना है कि परमेश्वर क्या सोच रहा है और वह हमसे क्या कह रहा है। और जब तक इसे मैं उस सीमा तक स्पष्टता और सटीकता से करता हूँ तब तक हमें कुछ सुनना है। यदि किसी बिन्दू पर मैं इस वचन से भटक जाऊँ तो मुझे आपके सामने इसे प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है। अतः तस्वीर यह नहीं है कि डेविड क्या सोच रहा है या डेविड क्या कहना चाहता है, सवाल यह है कि परमेश्वर क्या सोच रहा है और हमसे क्या कहना चाहता है। और वह चाहे जो कुछ कहे, यदि वह कहता है तो हम मानते हैं क्योंकि हम उसकी प्रजा हैं।

यह कुछ ऐसा भी नहीं है जहाँ हम परमेश्वर के साथ "ठीक" बनने के लिए कुछ निश्चित बातों को कर सकें। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर हमें दिखाना चाहता है कि उसका वचन क्या कहता है, और फिर हमें परमेश्वर के आत्मा की ओर ले जाना चाहता है। कि हम घण्टों तक, मेरा मतलब है घण्टों तक परमेश्वर के सामने प्रार्थना में कुश्ती लड़ें कि यह वचन हमारे जीवन में कैसे लागू होता है। यदि हम केवल आपस में ही इसके बारे में बात करते हैं और फिर आकर कहते हैं कि यह ऐसा होगा, तो हम परमेश्वर के वचन में हमारे लिए उसकी योजना से चूक जायेंगे। वह हमें अपने साथ लाना चाहता है, अपने वचन के साथ, अपनी आत्मा के साथ और हमारे हृदयों को रूपान्तरित करना चाहता है और हमारे दिलों को बदलना चाहता है, हमें इस तरह पूर्णतः बदलना चाहता है जिसके बाहरी प्रभाव होंगे, परन्तु उसकी जड़ें आन्तरिक बदलाव में होंगी।

आज की हमारी मसीही संस्कृति में आन्तरिक बदलाव को अनुभव करने के लिए परमेश्वर के साथ अनिवार्य समय व्यतीत करने से बचने के लिए हम जो कुछ कर सकते हैं, वह सब करते हैं, और मैं इसे किसी से

छीनना नहीं चाहता। और इसलिए मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ कि वचन को केवल सुनें ही नहीं, केवल सुनें ही नहीं, आपस में बातचीत करें, वचन को केवल सुनें ही नहीं, आपस में बातचीत करें और व्यावहारिकता को खोजें। मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ कि इस वचन को लेकर आप एकान्त में परमेश्वर के साथ बैठें। एकान्त में परमेश्वर के साथ रहें और परमेश्वर से पूछें, इस बात पर परमेश्वर से कुश्ती लड़ें कि यह वचन आपके जीवन में कैसे लागू होता है। आइए हम प्रार्थना करें।

पिता, हम कठिन वचनों को, मुश्किल वचनों को, यीशु के कठोर वचनों को पढ़ने वाले हैं। वे वचन जो हमारे कानों और मसीहियत की हमारी समझ के लिए भी बिल्कुल अनजाने हैं, और इसलिए हमारी प्रार्थना है, परमेश्वर, आप मसीहियत को समझने के हमारे झूठ और असत्यों को प्रकट करें। आप हमारे जीवन में और अपनी कलीसिया में सत्य को प्रकट करें। और हमारी प्रार्थना है कि इसका परिणाम यहाँ और सारे देशों में आपके नाम की महिमा के लिए हमारे जीवनों का रूपान्तरण हो। हमारे अन्दर इस कार्य को करने के लिए हमें आपके आत्मा की जरूरत है। मुझे इसकी घोषणा की शुरूआत करने के लिए भी आपके आत्मा की जरूरत है। हम सबको इसे सुनने के लिए आपके आत्मा की जरूरत है और निश्चित रूप से इसे मानने के लिए हम सबको आपके आत्मा की जरूरत है। और इसलिए हमारी प्रार्थना है कि आप हमारे अध्ययन और हमारे जीवन पर अपने आत्मा को उण्डेलें और आप हमें मसीह के स्वरूप में रूपान्तरित कर दें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

मसीही का बलिदान...

एक मुख्य सवाल आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या आप यीशु की शर्तों को मानने के लिए तैयार हैं? क्या आप यीशु की शर्तों को मानने के लिए तैयार हैं? यह सवाल मैं ने इसलिए पूछा है क्योंकि हम ने जिस मसीहियत को अपनाया है उस में हम अपनी शर्तों पर यीशु के पास आते हैं। आप देखें कि हम मसीहियत का वर्णन कैसे करते हैं, कैसे हम लोगों को मसीह में आने के लिए प्रेरित करते हैं, और आप ऐसे शब्दों को देखेंगे जो नये नियम में हैं ही नहीं। आप इस तरह की बातों को देखेंगे जैसेः आप यीशु की ओर जाने वाली रोमी सड़क पर चलें, इन चार आत्मिक नियमों पर विश्वास करें, इन सवालों के सही उत्तर दें, इस प्रार्थना को करें, इस कार्ड पर हस्ताक्षर करें, अपना हाथ उठाएँ और यीशु के प्रति अपने प्रेम की घोषणा करें।

यीशु ने अपने चेलों से इनमें से कुछ भी करने के लिए नहीं कहा, एक भी नहीं। मैं चाहता हूँ आप सुनें कि यीशु ने क्या कहा। लूका 14:26, यीशु ने अपने साथ चल रही भीड़ से यह कहा। यीशु अपनी शर्तों को यहाँ बता रहे हैं।

> *यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता; और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका? या कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं? नहीं तो उसके दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा। वह न तो भूमि के और खाद के लिए काम में आता है : उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।* (लूका 14:26–35)

क्या आप उस भीड़ में खड़े होने की कल्पना कर सकते हैं? यह व्यक्ति अपने आपको क्या समझता है? अपने आप को उन लोगों के स्थान पर रख कर सोचें। तो मुझे अपनी माता और अपने पिता और अपने भाई और अपनी बहन और अपनी पत्नी और अपने बच्चों से घृणा करनी है? तुम्हारे पीछे चलने के लिए मुझे एक पीड़ादायक वस्तु उठानी है और सब कुछ त्यागना है। हम में से अधिकाँश लोगों को यीशु ने इस परिच्छेद के आरम्भ में ही खो दिया है। मेरे लिए यह सोचना भी डरावना है कि मैं ने पहली सदी में उन वचनों का प्रत्युत्तर कैसे दिया होता।

और कुछ लोग सोच सकते हैं कि ऐसे वचन आज हमारे लिए अत्यधिक कठिन हैं। कुछ कह सकते हैं, "हमें ऐसे परिच्छेद को देखने की आवश्यकता नहीं है। क्या हम वास्तव में ऐसे वचनों को सुनने के लिए तैयार हैं? क्या हम इस प्रकार के वचनों को सुनने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हैं?" और यीशु लोगों इसी तरह बुलाता है। यीशु यहाँ एक परिपक्व भीड़ से बात नहीं कर रहा था जिन्हें गहराई में जाने की

आवश्यकता थी। यहाँ यीशु ऐसे लोगों से बात कर रहे थे जो यीशु के पीछे चलना चाहते थे और यीशु का उनके लिए आरम्भिक निमंत्रण था। अपने पिता और अपनी माता से घृणा करो, क्रूस उठाओ और जो कुछ तुम्हारे पास है उसे त्याग दो। यीशु ने यही कहा था।

यह सोचना आज की हमारी मसीहियत पर एक तीखा अभियोग है कि ये वचन हमें इतने कट्टर लगते हैं क्योंकि वे हमें अनजाने प्रतीत होते हैं। यह आरम्भिक, मूलभूत सत्य है, जो यीशु ने बताया कि उसके पीछे चलने का क्या अर्थ है। और वे आज इतने अनजाने हो गए हैं। यह हमारे बारे में क्या बताता है कि हम यीशु मसीह के चेले होने के अर्थ से कितनी दूर भटक गए हैं? यहाँ तक कि आज हम यह सवाल भी करते हैं, "क्या चेले की बजाय एक विश्वासी बना जा सकता है?" जैसे कि मसीहियत के विभिन्न स्तर हैं। एक, पतला स्तर है जहाँ आपको इतनी अधिक कीमत नहीं चुकानी पड़ती है। और जो वास्तव में रूचि रखते हैं वे गहराई में, मसीहियत के उच्च स्तर तक जा सकते हैं। नया नियम इसके बारे में कुछ भी नहीं जानता है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आत्मिक परिपक्वता के मामले में हम सब एक ही स्थान पर हैं या जब हम आरम्भ में मसीह में आते हैं उसी समय हमें वह सब पता होता है जितना कि 20 वर्ष बाद हमें पता होता है। परन्तु तस्वीर साफ है। तीन बार यीशु कहते हैं यदि तुम इन बातों को नहीं करते हो तो तुम मेरे चेले नहीं हो सकते। ये शर्तें हैं, शिष्यत्व की मूलभूत शर्तें। जब हम इस प्रकार के परिच्छेद को देखते हैं जहाँ यीशु एक ऐसी भीड़ से बात कर रहे हैं जो अपनी शर्तों पर यीशु के साथ चल रही थी तो मैं सोचता हूँ क्या मैं भी ऐसे लोगों से बात कर रहा हूँ जो अपनी शर्तों पर यीशु के साथ चल रहे हैं? हम में से कुछ लोगों को, अधिकाँश नहीं तो भी बहुत से लोगों को यह सवाल पूछने की आवश्यकता है, "क्या हम कभी यीशु की शर्तों पर उसके पास आए हैं?" यह एक महत्वपूर्ण सवाल है। क्या आप कभी यीशु की शर्तों पर उसके पास आए हैं?

यह एक सुसमाचारीय वचन है। यीशु पहली बार लोगों को अपने पीछे आने का निमंत्रण दे रहे हैं। अतः मैं चाहता हूँ कि हम शर्तों को देखें, और आप देखते हैं तीन बार, वे इन शब्दों का प्रयोग करते हैं, "यदि कोई यह न करे।" ये शर्तें हैं, मसीही का बलिदान है। और मैं आपको यीशु की शर्तों को सुनने और इस सवाल पर विचार करने का निमंत्रण देता हूँ, "क्या आपने कभी इन शर्तों पर यीशु को प्रत्युत्तर दिया है?" चाहे आप 70 वर्षों से कलीसिया में रहे हों, क्या आपने कभी इन शर्तों पर यीशु को प्रत्युत्तर दिया है?

यीशु श्रेष्ठ प्रेम की माँग करते हैं

पहली शर्त, यीशु श्रेष्ठ प्रेम की माँग करते हैं। लूका 14:26, "यदि, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" कठोर बात। यह ध्यान खींचने वाला है। इसका क्या अर्थ है? यीशु क्या कह रहे हैं जब वह कहते हैं अपने पिता और अपनी माता और अपने भाई और बहन, पत्नी और बच्चों को अप्रिय जानें? आप में से कुछ लोग सोच रहे हैं, "मुझे यह समझ नहीं आ रहा, मैं ने तो सोचा था कि हमें लोगों से प्रेम करना है, और हमने माता–पिता का आदर करने के बारे में भी बात की है। आप एक ही समय पर उनका आदर और उनसे घृणा कैसे कर सकते हैं?" यह एक अच्छा सवाल है, क्या नहीं?

क्या मुझे वास्तव में अपनी पत्नी और अपने बच्चों को अप्रिय जानना है? इसका क्या मतलब है? यीशु यहाँ कुछ कह रहे हैं। अब, मैं यहाँ अत्यधिक सावधान रहना चाहता हूँ, न केवल यहाँ बल्कि प्रत्येक परिच्छेद में जिसका हम इस श्रंखला में अध्ययन करते हैं, क्योंकि हमारे सामने यीशु के वचनों को कोमल करने की कोशिश करने की खतरनाक परीक्षा है। हम अपने जीने के तरीके को सही ठहराने के लिए यीशु के वचनों को कोमल करने का प्रयत्न करते हैं। यह मसीहियत को समझने का एक खतरनाक तरीका है। हम अक्सर कहते हैं, "ओह, उसका वास्तव में यह मतलब नहीं था, उसका मतलब यह था..." हमें ईमानदारी से पवित्रशास्त्र पर नजर डालनी है और देखना है कि इसका यीशु के मूल श्रोताओं के लिए क्या अर्थ था।

अतः, यहाँ अपने स्थान को थामे रहें। मेरे साथ मत्ती 22 पर चलें। मैं आपको मत्ती में दो परिच्छेद दिखाना चाहता हूँ जो उस पर प्रकाश डालते हैं जिसे यीशु लूका 14 में कह रहे हैं। यह एक श्रेष्ठ प्रेम की तस्वीर है– मत्ती 22 यीशु और व्यवस्था के एक निपुण गुरू के बीच का वार्तालाप है। आप में से कुछ लोग, शायद बहुत से लोग इस परिच्छेद से परिचित होंगे। मत्ती 22:36, यह व्यवस्थापक यीशु से सवाल पूछता है, *"हे गुरू, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? यीशु ने उससे कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।"* (मत्ती 36–40).

हमारे जीवन में पहली और मुख्य आज्ञा है कि हम अधूरे दिलों से परमेश्वर से प्रेम करें? नहीं। अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि, अपनी सारी ताकत के साथ। यह इस विचार को ही खत्म

कर देता है कि हमारे प्रेम में प्राथमिकताएँ हैं। कि परमेश्वर पहला है, फिर दूसरा परिवार, और यह व्यक्ति तीसरा या चौथा। नहीं। परमेश्वर सब कुछ है, प्राथमिक, सर्वोच्च, श्रेष्ठ प्रेम। सब कुछ, आपका सम्पूर्ण प्रेम परमेश्वर का है, और पवित्रशास्त्र की गवाही यहीं से बहती है। दूसरी आज्ञा पहली के समान है। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। इसे हम पूरे नये नियम में जानते हैं। जब आपके जीवन में परमेश्वर का प्रेम सर्वोच्च होता है, तो उसका परिणाम किस के प्रति प्रेम होगा? एक दूसरे के प्रति नहीं। ये दोनों साथ चलते हैं। एक–दूसरे के प्रति प्रेम किस के प्रति प्रेम से उत्पन्न होता है? परमेश्वर के प्रति। उस से प्रेम करना सर्वोच्च है, यह श्रेष्ठ प्रेम है।

अब पीछे मत्ती 10 पर आएँ। स्पष्टतः एक प्रेम है जो दूसरे हर प्रकार के प्रेम से ऊपर है। परमेश्वर से प्रेम करना, मसीह से प्रेम करना। आप मत्ती 10 पर आते हैं और एक परिच्छेद पर आते हैं जो वैसा ही है जैसा हम लूका 14 में देख रहे हैं। सुनें यीशु वहाँ क्या कहते हैं, पद 37, देखें क्या यह परिचित नहीं है। *"जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।"* (मत्ती 10:37–38). यहाँ की तस्वीर को देखें। मत्ती 10 में एक शक्तिशाली तुलना है, मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम अपनी माता या पिता, पुत्र या पुत्री के प्रति प्रेम से कहीं बड़ा है।

उस सन्दर्भ को हम लूका 14 में लाते हैं, और हम यीशु को "घृणा" शब्द का प्रयोग करते देखते हैं। यह स्पष्टतः एक कठोर शब्द है, ठेस पहुँचाने वाला शब्द, और हमें इसे कोमल बनाने का प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। मेरा विश्वास है कि यीशु जो कह रहे हैं वह स्पष्ट है। उसके चेलों में उसके प्रति प्रेम इतने श्रेष्ठ स्तर का होना चाहिए कि संसार में दूसरा प्रत्येक प्रेम उसके सामने इतना छोटा हो जाए कि वह उस प्रेम की तुलना में घृणा जैसा लगने लगे। <u>मसीह के लिए प्रेम की तुलना में, हम अपने प्रियजनों से घृणा करते हैं।</u> अब, शब्दों को देखें। ऐसा नहीं है कि हम उनसे प्रेम नहीं करते हैं।

<u>यह हमारे दृष्टिकोण को बदल देता है,</u> क्योंकि– इससे न चूकें– जब परमेश्वर के प्रति प्रेम सर्वोच्च है और जब परमेश्वर का प्रेम हमें जकड़ लेता है, तो हम तो अपनी माता या पिता के प्रति कौनसा प्रेम दिखा रहे हैं? किस का प्रेम? परमेश्वर का, मसीह का जो हमारे अन्दर है। यही तस्वीर विवाह, पत्नी या बच्चों की है। पुरूषो, आप इफिसियों 5:25 को कैसे निभाते हैं? अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिए दे दिया। आप उसे कैसे करते हैं यदि आपके जीवन में मसीह

का प्रेम सर्वोच्च नहीं है? आप नहीं कर सकते, यह असंभव है। ऐसा नहीं है कि इनमें से एक ही रह सकता है। एक, दूसरे से बहता है परन्तु इसकी शुरूआत मसीह और परमेश्वर के प्रति प्रेम की श्रेष्ठता से होती है।

हमारे हृदय परमेश्वर के प्रति एक श्रेष्ठ प्रेम से जीते हुए, जकड़े हुए। इस प्रकार के प्रेम के बारे में हम बहुत कम जानते हैं। आप जानते हैं कि मसीह चाल–चलन के बारे में हम कैसे बात करते हैं। हम कहते हैं, "मैं जानता हूँ कि मुझे कलीसिया में जाने की जरूरत है। मैं जानता हूँ कि मुझे अपने बच्चों को कलीसिया में ले जाने की जरूरत है। मैं जानता हूँ कि मुझे प्रार्थना करने की जरूरत है। मैं जानता हूँ कि मुझे बाइबल पढ़ने की जरूरत है।" यह मसीहियत नहीं है। यह मसीहियत है ही नहीं। मसीहियत मसीह की आज्ञा मानने से डाह नहीं करती। इसे हम मानवीय स्तर पर जानते हैं। हमें यह विचार कहाँ से मिला कि मसीहियत आज्ञापालन से डाह करना है? हम इस संसार की सारी वस्तुओं को छोड़ देते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं और हम वे काम करते हैं जिन्हें हम वास्तव में करना नहीं चाहते लेकिन हमारी खाल बचाने के लिए उन्हें करना जरूरी है। इसके बारे में हम इसी प्रकार सोचते हैं, परन्तु यह मसीहियत नहीं है, बाइबल की मसीहियत नहीं है। बाइबल की मसीहियत मसीह की श्रेष्ठता को देखती है, और उस पर इतनी मोहित है, उससे इतनी आकर्षित है, कि उसके प्रति हमारा प्रेम हम से सब कुछ करवा लेता है। यह श्रेष्ठ प्रेम है जो इस संसार की हर बात के बारे में हमारे दृष्टिकोण को बदल देता है।

और लूका 14:26 के प्रकाश में आपके सामने सवाल यह है क्या आप मसीह से प्रेम करते हैं? क्या आप मसीह को चाहते हैं? क्या आप अपने सारे मन और सारे प्राण और सारी बुद्धि से उससे प्रेम करते हैं? मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि क्या आप कलीसिया में जाते हैं। मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि क्या आप बाइबल पढ़ते हैं या आप प्रार्थना करते हैं या आप सिखाते हैं या आप इस काम को या उस काम को करते हैं, या आप बच्चों को अच्छी तरह पाल रहे हैं। कचरा। कचरे से बाहर निकलें। क्या आप मसीह को चाहते हैं? क्या आप मसीह से प्रेम करते हैं? क्या वही आपके जीवन का कारण है, जिसके लिए आपका दिल धड़कता है और आपका प्रेम उठता है? यह तस्वीर है, श्रेष्ठ प्रेम। यह दूसरे किसी भी प्रेम को घृणा जैसा बना देता है।

मैं यहाँ सावधान रहना चाहता हूँ। परन्तु मुझे निश्चय है कि आज हम हमारी संस्कृति में हमारे बच्चों और हमारे विवाह और शारीरिक संबंधों और रिश्तों, माता–पिता, परिवारों और मित्रों को उस बिन्दू तक प्रेम करते हैं कि यीशु मसीह को हमारे प्रेम का बचा–खुचा मिलता है और यह मसीही नहीं है। यदि ऐसा है तो आप

यीशु के चेले भी नहीं बन सकते। आप सारे रिश्तों को त्याग दें और उसके साथ घनिष्ट संबंध स्थापित करें। यीशु मसीह के चेले होने का यही अर्थ है।

क्या आप जानना चाहते हैं कि यह व्यवहारिक रूप से कैसा होगा? मैं आपको जॉन बन्यन की ओर संकेत करूँगा। जॉन बन्यन एक ऐसे समय में रहते थे जब मसीह का चेला बनना आसान नहीं था, विशेषतः मसीह के सुसमाचार का प्रचारक बनना आसान नहीं था। और जॉन ने प्रचार किया, और उससे कहा गया, बन्यन यदि तुम प्रचार बन्द नहीं करोगे तो तुम्हें जेल में डाल दिया जाएगा। उसके परिवार की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। वह और उसकी पत्नी और उसके बच्चे, जिनमें से एक अन्धा था। जब वह आजाद था तो भी उन्हें बहुत मुश्किल से पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलता था। वह जानता था कि यदि उसे जेल में डाल दिया गया तो उसके परिवार पर बड़ा संकट आ पड़ेगा। तो वह क्या करे? जब आप ऐसी अवस्था में होते हैं तो आप क्या करते हैं? क्या आप प्रचार करना जारी रखते हैं? जॉन बन्यन प्रचार करते रहे और उन्हें जेल में डाल दिया गया।

और जेल में से उन्होंने लिखा, "अपनी पत्नी और बच्चों से बिछुड़ना इस स्थान में अक्सर मेरे लिए मेरी हड्डियों में से मांस को अलग किए जाने के समान है। और यह केवल इस कारण नहीं है कि ये बड़े अनुग्रह मुझे बहुत प्रिय हैं," अपने परिवार, अपने बच्चों के बारे में बात करते हुए, "परन्तु इस कारण भी मैं अक्सर उन सारे कष्टों, विपत्तियों को अपने मन में ले आता हूँ जिनका मेरा परिवार संभवतः सामना कर रहा होगा, विशेषतः मेरा अन्धा बच्चा जो मेरा सबसे प्रिय था। ओह, मेरा अन्धा बच्चा जिन कठिनाईयों को सह रहा होगा उनका विचार ही मेरे दिल को तोड़ देता है। लेकिन फिर भी," बन्यन ने कहा, "फिर भी," जेल की कोठरी से वह लिखते हैं, "मुझे परमेश्वर के साथ सारा जोखिम उठाना है। इस अवस्था में मैं ने देखा है कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के समान हूँ जो अपने घर को खींचकर अपनी पत्नी और अपने बच्चों के ऊपर गिरा रहा है, फिर भी, मैं ने सोचा, मेरे लिए यह करना जरूरी है, मेरे लिए यह करना जरूरी है।" यीशु श्रेष्ठ प्रेम की माँग करते हैं। क्या आपसे उसे यह मिलता है? यदि नहीं, तो यीशु कहते हैं, तुम मेरे चेले नहीं हो सकते।

यीशु पूर्ण वफादारी की माँग करते हैं

यीशु दूसरी शर्त बताते हैं, पद 27, *"और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।"* दूसरी शर्त यीशु श्रेष्ठ प्रेम और पूर्ण वफादारी की माँग करते हैं। उसके क्रूस को

उठाएँ। यह शब्द, यह वाक्यांश शायद नये नियम के वाक्यांशों या शब्दों में से सबसे अधिक गलत समझा गया है और इसे गलत लागू किया गया है।

आज लोग क्रूस उठाने के बारे में बात करते हैं, और अक्सर वे अपनी विश्वास की यात्रा के बारे में बताते हैं और लोग कहते हैं, "मैं इस बीमारी या उस रोग को सह रहा हूँ या इस संघर्ष से गुजर रहा हूँ। मैं खराब रिश्ते में हूँ या खराब विवाह में या बुरी परिस्थितियों में हूँ और इस क्रूस को मैं उठा रहा हूँ।" यीशु यहाँ इसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यह इस पूरे बिन्दू से चूक जाता है जिसके बारे में यीशु यहाँ बात कर रहे हैं। पहली सदी में श्रोताओं ने यह नहीं सुना था जब यीशु ने इसके बारे में बताया और हमें भी आज यह सुनने की आवश्यकता नहीं है।

हमें अपने आप को उनकी जगह पर रखकर उसे महसूस करना है जो यीशु ने कहा, *"और जो कोई अपना क्रूस न उठाए।"* क्रूस आपको केवल तभी उठाना पड़ता है जब आप दोषी करार दिए गए अपराधी हैं, मृत्युदण्ड आपको दिया गया है, और क्रूस आपकी पीठ पर लाद दिया जाता है जिसे लेकर आप नगर के बीच में से अपमान सहते हुए अपनी मृत्यु के स्थान तक पहुँचते हैं। यह यीशु के श्रोताओं के लिए घृणित था। हमें इसके भार को महसूस करना है। हम क्रूस को पहनते हैं, हर जगह क्रूस को देखते हैं।

इसे वर्तमान समय में लाने का प्रयत्न करें। यह इस प्रकार होगा यदि मैं आपसे कहूँ, "यदि तुम अपनी इलैक्ट्रिक चेयर को न उठाओ तो तुम यीशु के चेले नहीं हो।" क्या यह घृणित नहीं लगता? यह भी पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि क्रूस में इलैक्ट्रिक चेयर से कहीं ज्यादा दरिन्दगी और यातना शामिल थी। वास्तविकता यह है कि यदि आप क्रूस को उठाकर चल रहे हैं तो आप चलती हुई लाश के समान हैं। अब आपके कोई सपने नहीं हैं, अपने जीवन के लिए कोई योजना नहीं है, कोई विचार नहीं है कि अपने जीवन में आप क्या करेंगे। आपके लिए सब कुछ समाप्त हो चुका है। अब आपके अन्दर कोई घमण्ड नहीं है, कोई आदर नहीं बचा, कुछ भी नहीं है। सबके सामने अपमान को सहते हुए आप उस स्थान की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ इस क्रूस के ऊपर आपको लटका दिया जाएगा और आप मर जायेंगे। आप चलते हुए मुर्दे के समान हैं और यीशु कहते हैं कि उसके पीछे चलने का यही अर्थ है। कोई ग्रहण करने वाला है?

यह कठोर है। और यीशु कह रहे हैं <u>मसीह के क्रूस के द्वारा, अपने जीवन के लिए हम मर जाते हैं।</u> यदि आप एक मसीही हैं, पवित्रशास्त्र के अनुसार, न कि मसीहियत की समकालीन परिभाषा के अनुसार, यदि पवित्रशास्त्र के अनुसार आप एक मसीही हैं, तो आप मुर्दा हैं, आप मर चुके हैं। आप अपने लिए मर चुके हैं,

आप अपने सपनों के लिए मर चुके हैं, आप अपनी आशाओं के लिए मर चुके हैं, आप अपनी योजनाओं के लिए मर चुके हैं, अपने विचारों के लिए कि जीवन में क्या होने वाला है, आप मर चुके हैं। इन सारी बातों के लिए आप मर चुके हैं। इसी कारण इससे ठीक पहले पद 26 के अन्त में यीशु कहते हैं, केवल इन लोगों को ही नहीं, बल्कि जो अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

आप अपनी इच्छा के अनुसार, अपने सपनों के अनुसार, अपनी योजना के अनुसार, अपनी आशा के अनुसार, अपनी चाहत के अनुसार नहीं जीते हैं, वे सारी बातें पुरानी हो गई हैं, वे सब जा चुकी हैं, उनके लिए आप मर चुके हैं। और, यह गलातियों 2:20 है, *"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।"* आप कहेंगे, डेविड हम तो नहीं मरे हैं, हम साँस ले रहे हैं, तो हम कैसे जीवित हैं? हम मसीह में जीवित हैं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है। यही तस्वीर है। हम अपने लिए मर गए हैं और हम मसीह के लिए जीवित हैं। हम आत्म–सम्मान के बारे में सोचने के लिए मर गए हैं। हम अपनी स्व–केन्द्रित अभिलाषाओं के लिए मर गए हैं। हम अपने जीवन की आत्म–केन्द्रित योजनाओं के लिए मर गए हैं। हम आरामदायक जीवन के लिए मर गए हैं, इन सबके लिए मर गए हैं।

हम मसीह के सम्मान के लिए और मसीह के आदर के लिए और मसीह की लालसा के लिए और मसीह की योजना के लिए और मसीह–केन्द्रित जीवन के लिए जीवित हैं। अपने लिए मर गए हैं और मसीह के लिए जीवित हैं, और हमारी सम्पूर्ण पहचान उसमें छिपी है कि वह कौन है। हम इन सारी बातों के लिए मर गए हैं और उसके लिए जीवित हैं। अब यह न केवल हमारे दृष्टिकोण को बदलता है बल्कि, <u>हमारी प्राथमिकताओं को भी बदल देता है</u> क्योंकि अब मसीह का जीवन हमारे बारे में सब कुछ निर्धारित करता है। आप निर्धारित नहीं करते कि आपको कहाँ रहना है, मसीह निर्धारित करता है कि आपको कहाँ रहना है। आप निर्धारित नहीं करते कि आपको कैसा घर चाहिए, यह मसीह का काम है। आप निर्धारित नहीं करते कि आपको कैसी कार चाहिए, यह मसीह का निर्णय है। आप निर्धारित नहीं करते कि आपको कैसे वस्त्र चाहिए, आप निर्धारित नहीं करते कि आपको क्या खरीदना है, अपनी योजनाओं का निर्धारण आप नहीं करते, आप कुछ भी निर्धारित नहीं करते हैं। अब सब कुछ मसीह निर्धारित करता है। आप अपने जीवन के लिए मर चुके हैं और अब आप अपने जीवन के लिए कोई निर्णय नहीं लेते हैं। सब कुछ मसीह निर्धारित करता है।

यह आपके जीवन और मेरे जीवन पर अधिकार का बड़ा दावा है। और वह पद 28 से पद 30 तक दो उदाहरणों का प्रयोग करता है। पहला उदाहरण पद 28 में, और दूसरा उदाहरण पद 31 में। पहले यीशु कहते हैं, "हम भवन बनाने वाले लोग हैं।" इससे न चूकें। यीशु कहते हैं, "कीमत का हिसाब लगाकर देखो कि क्या तुम्हारे पास इसे पूरा करने के लिए पर्याप्त धन है।" यीशु यहाँ जल्दी में भावुकता में उसके पीछे चलने का निर्णय लेने के विरूद्ध चेतावनी दे रहे हैं। बेहतर होगा यदि तुम पहले कीमत का पता लगा लो। यह अत्यधिक अलग है। पिछले सप्ताह हमने इसके बारे में थोड़ी बात की थी। आप आज के किसी सुसमाचारक को लें जो किसी पापी से, किसी खोए हुए से मिलता है। सुसमाचारक कहता है, "क्या तुम जानते हो कि तुम एक पापी हो? क्या तुम विश्वास करते हो कि यीशु क्रूस पर मरे? यदि उन सवालों का उत्तर हाँ में है, तो परमेश्वर के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।" समस्या केवल यह है कि शैतान भी उन दोनों सवालों का उत्तर हाँ में दे सकता है।

और इस बीच यीशु अनुरोध कर रहे हैं, कीमत को आँक लो, कीमत का हिसाब लगा लो, कीमत का हिसाब लगा लो, कुछ भी करने से पहले कीमत का हिसाब लगा लो। यहाँ एक कीमत है जिस पर विचार करने के बाद ही आप एक कदम आगे बढ़ाएँ। तो इसकी आपको क्या कीमत चुकानी पड़ती है? क्या इससे सब कुछ दाँव पर लग जाता है? जॉन स्टॉट, मेरे पसन्दीदा लेखकों/प्रचारकों में से एक, ने लिखा,

> मसीही परिदृश्य अर्द्ध–निर्मित गुम्मटों के लावारिस मलबों से भरा है; उनके खण्डहरों से जिन्होंने बनाना शुरू किया और खत्म नहीं कर पाए। क्योंकि हजारों लोग अब भी मसीह की चेतावनी को अनदेखा करते हैं और पहले रूककर उसके पीछे चलने की कीमत पर विचार किए बिना उसके पीछे चलना शुरू कर देते हैं। परिणाम आज मसीहियत का बड़ा अपयश है, तथाकथित नामधारी मसीहियत। जिन देशों में मसीही सभ्यता फैली है, वहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने अपने आप को मसीहियत की शालीन परन्तु झीनी परत से ढाँप लिया है। वे असहज होने के लिए नहीं, परन्तु सम्मानित बनने के लिए पर्याप्त रूप से शामिल हो गए हैं। उनका धर्म एक बड़ा मुलायम गद्दा है। जो अपने स्थान और आकार को उनकी सुविधा के अनुसार बदलते हुए जीवन के कठोर अनाकर्षणों से उनकी सुरक्षा करता है। कोई आश्चर्य नहीं कि छिद्रान्वेषी कलीसिया में पाखण्डियों के होने की बात करते हैं और धर्म को पलायनवाद के रूप में खारिज कर देते हैं।

यह समकालीन मसीहियत है, क्या नहीं? अधूरी ईमारतें। "मुझे पता नहीं था कि इसका अर्थ सब कुछ था।" यीशु कहते हैं, कीमत का हिसाब लगाओ। हम भवन बनाने वाले लोग हैं और फिर वे दूसरा उदाहरण बताते

हैं, हम युद्ध लड़ने वाले योद्धा हैं। वह एक राजा के रूप में युद्ध में जाने की बात करते हैं। पूरे नये नियम में हम इस प्रकार की तस्वीर देखते हैं, अच्छी लड़ाई लड़ना, आत्मिक युद्ध में होना। अब, मैं यहाँ सावधान रहना चाहता हूँ। यह, या नया नियम कहीं भी पवित्र युद्ध के बारे में बात नहीं करता है, जैसा हम अक्सर कट्टर इस्लाम से जुड़ी खबरों में सुनते हैं। यह किसी भी तरह से आतंकवाद पर युद्ध के बारे में बात नहीं कर रहा है। यह युद्ध बन्दूकों और बम से नहीं लड़ा जाता है। यह युद्ध सुसमाचार से, प्रार्थना से, त्यागपूर्ण प्रेम से लड़ा जाता है।

और नये नियम में यह स्पष्ट है कि मसीही जीवन में एक आत्मिक युद्ध है। हमारे जीवनों में पवित्रता का एक आत्मिक युद्ध है और इस पूरे ग्रह पर पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों की आत्माओं के लिए लड़ा जाने वाला आत्मिक युद्ध है, जो या तो अनन्त स्वर्ग में जायेंगे या अनन्त नरक में। पृथ्वी पर लड़े गए किसी भी युद्ध से इस युद्ध में दाँव बहुत बड़ा है। यीशु कहते हैं युद्ध में जाने से पहले तुम यहाँ बैठ सकते हो। क्या दाँव पर लगा है और क्या शामिल है।

इस सप्ताह इस परिच्छेद को पढ़ते समय मैं इस रूपक पर विचार कर रहा था, और मैं अपने आप को यह सोचने से नहीं रोक सका कि आज मसीहियत के हमारे संस्करण में वास्तव में ऐसा नहीं लगता है कि मसीही जीवन युद्ध के समय का विश्वास है। हमारा विश्वास शान्ति के समय जैसा अधिक है, क्या नहीं? और इन दोनों के बीच तीव्र भिन्नता है। युद्ध के समय में, आप हमेशा यह सवाल पूछते हैं, "मैं आगे बढ़ने के लिए क्या बलिदान कर सकता हूँ? मैं अपने सारे संसाधनों को कैसे खर्च कर सकता हूँ? मैं मिशन को पूरा करने में सर्वोत्तम योगदान कैसे दे सकता हूँ?" क्योंकि हम हँसी–मजाक में नहीं लगे हैं, हम यह सोच रहे हैं कि मिशन को सर्वोत्तम रूप से कैसे पूरा किया जाए और उसके लिए कैसे सब कुछ बलिदान किया जाए। शान्ति के समय में, हँसी–मजाक चरम पर होता है। हम ऐसे सवाल पूछते हैं, "हम कैसे और अधिक आराम पा सकते हैं? हम कैसे ज्यादा आनन्द ले सकते हैं? और कैसे हम उन नये सुखों का आनन्द ले सकते हैं जिनका हमने पहले कभी अनुभव नहीं किया है?"

जीवन और मसीहियत को जीने का एक युद्ध के समय और शान्ति के समय जैसा तरीका है। आप एक जहाज पर इन दोनों के बीच के अन्तर को देखते हैं। क्वीन मैरी नामक यह जहाज अब लोंग बीच, कैलिफोर्निया के बन्दरगाह पर खड़ा है। इसका निर्माण 20वीं सदी के आरम्भ में धनवान लोगों को लुभाने के लिए हर तरह की विलासिता के साजो–सामान के साथ किया गया था। इसमें एक बार में 3,000 धनवान लोग यात्रा कर सकते थे; विशालकाय, यहाँ तक कि टाइटैनिक से भी बड़ा। परन्तु रूचिकर बात यह है कि

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब देश राष्ट्रीय आपातकाल की स्थिति में था, तो उन्होंने इसी जहाज को लेकर सैनिकों के परिवहन में सहायता के काम पर लगा दिया।

और अचानक, जहाज को विलासितापूर्ण यात्रा से सैनिकों के परिवहन के स्रोत के रूप में बदल दिया गया। जिस जहाज में कभी 3,000 लोग आते थे, अब वह एक बार में 15,000 सैनिकों को ले जा सकता था। पूरे जहाज को अमीरों के विलास की बजाय मिशन को पूरा करने के लिए सैनिकों को ले जाने के लिए उलट–पुलट कर दिया गया। आज आप इस जहाज पर जाएँ, अब यह एक संग्रहालय है, मूलतः अपने इतिहास का, और आप देख सकते हैं कि कुछ स्थान उन्होंने सैनिकों को ले जाने के लिए तैयार किए हैं जहाँ आप सैनिकों के सोने के स्थान को देख सकते हैं, हर वस्तु, हर विवरण का प्रयोग मिशन को पूरा करने के लिए किया गया। और फिर आप दूसरे कमरे में देख सकते हैं और वहाँ आप देखेंगे कि वे लोगों के लिए यात्रा का आनन्द उठाने के लिए विलासितापूर्ण जहाज के रूप में तैयार किए गए हैं।

मैं आपसे पूछता हूँ, आज कौनसा रूपक हमारे जीवनों में, हमारे परिवारों में, हमारे घरों में, और हमारी कलीसियाओं में, आज की मसीहियत का बेहतर वर्णन करता है? और मैं कहता हूँ, आइए हम कीमत का हिसाब लगाएँ। क्या होगा यदि हम 4.5 अरब से अधिक लोगों को देखें जो मसीहरहित अनन्तकाल की ओर जा रहे हैं, और उन 30,000 बच्चों को देखें जो आज भूख से या अन्य निवारणीय रोग से मर रहे हैं, और हम कहें, "हम इस जहाज का, अपने जीवनों का, हमारे परिवारों का, या हमारी कलीसिया का प्रयोग अपनी विलासिता के लिए नहीं करेंगे। इसके विपरीत हम यह कहने के लिए सब कुछ बदलने जा रहे हैं कि क्या हम इस मिशन को पूरा करने की खातिर अपने जीवन दे सकते हैं।

यह मसीहियत को देखने का पूर्णतः अलग तरीका है और यीशु कहते हैं मूल्य पर विचार करो। तुम युद्ध में जाने वाले योद्ध हो। क्या तुम युद्ध में शामिल होना चाहते हो या बैठना चाहते हो? इस सवाल को यीशु हमारे सामने रखते हैं। यीशु कहते हैं मेरे चेले बनने के बाद तुम्हारी प्राथमिकताएँ बिल्कुल अलग हो जाती हैं।

यीशु पूर्ण हानि की माँग करते हैं

तीसरी शर्त, वह श्रेष्ठ प्रेम की, पूर्ण वफादारी की माँग करते हैं, और यीशु पूर्ण हानि की माँग करते हैं। पद 33 में, इस उदाहरण के बाद यीशु कहते हैं, *"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"* इस वचन को मुलायम बनाने का कोई अच्छा तरीका नहीं है इसलिए हम

इसे इसी प्रकार कहेंगे। मसीह की खातिर, यीशु कहते हैं, हमें अपना सब कुछ त्यागना है। यही शब्द है, त्याग दो, अलविदा कह दो। अपना सब कुछ छोड़ दो। यदि हम मसीह के पीछे चलना चाहते हैं तो हम अपना सब कुछ त्याग देंगे। कुछ बातें नहीं। कुछ बातें नहीं।

मेरा विचार है अपने दिल में, हमें यह सोचना पसन्द है कि हमारे पास इस प्रकार की मसीहियत है। यह उसका हिस्सा है जो मुझे कायल करता रहा है क्योंकि वास्तविकता यह है कि सब कुछ के ऊपर पूर्ण शासन होने के विपरीत, मसीह का मेरे जीवन में उन बातों पर पूर्ण शासन है जिन्हें मैं उसे आराम से दे सकता हूँ। और हम इसे देख चुके हैं, हमारे जीवन, हमारी भावनाएँ, हमारे सपने, हमारे परिवार, पत्नी, बच्चे, माता, पिता, भाई, बहन, इन सबको हम त्याग देंगे। परन्तु हमारे घर? हमारी कारें? क्या हम सब कुछ त्यागते हैं? हमारे सारे वस्त्र? हमारे टीवी? हमारे आईफोन? वे सारी वस्तुएँ जिनसे हम अपने जीवन को भरते हैं? क्या हम सब कुछ छोड़ देते हैं? क्या हम कहते हैं कि सब कुछ आप खोए हुओं की खातिर प्रयोग कर सकते हैं? सब कुछ आपका है, मेरे निवेश, मेरे बैंक खाते, निर्धनों के लिए आप इस्तेमाल कर सकते हैं। इन सबको आप अपनी महिमा के लिए जो आपको सर्वोत्तम लगे उसी तरीके से प्रयोग करें। यह सब आपका है। क्या हम ऐसा कहते हैं? जब हम सब कुछ त्याग देते हैं तो यह हमारे स्वामित्व को बदल देता है।

मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ इब्रानियों 10 पर आएँ। हमें इसे देखना है, इब्रानियों 10. मेरे साथ पद 32 को देखें। मैं इब्रानियों से कहना चाहता हूँ कि वह लूका 14 को समझने में हमारी सहायता करे। नये नियम में परमेश्वर के लोगों से पूछें, यह कैसा है? हमारे जीवनों में यह कैसा है? इब्रानियों 10 और 11 में इन लोगों को सुनें। इब्रानियों 10:32, याद रखें कि इब्रानियों लोगों के एक समूह, मसीहियों को उस समय लिखी गई थी जब मसीही होना प्रसिद्धि की बात नहीं थी, सताव एक यथार्थ था और लेखक पद 32 में कहता है, *"परन्तु उन पिछले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुःखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे। कभी–कभी तो यों कि तुम निन्दा और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कभी यों कि तुम उनके साझी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी।"* (इब्रानियों 10:32–33).

पद 34 को सुनें, *"क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरने वाली संपत्ति है।"* तुम ने अपनी संपत्ति आनन्द से दे दी। आप यह कैसे करते हैं? क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे पास सदा ठहरने वाली संपत्ति

है; इब्रानियों 10 में संपत्ति पर बिल्कुल अलग दृष्टिकोण। आप इब्रानियों 11 पर आएँ, पद 13 को देखें। यह विश्वास के वीरों की बात करत है, सुनें यह क्या कहता है,

> *ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। जो ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रकट करते हैं कि स्वदेश की खोज में हैं। और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं; इसीलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।* (इब्रानियों 11:13–16).

कैसी अतुल्य तस्वीर है। परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने से नहीं लजाता क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है। ये ऐसे लोग हैं जो दूसरे नगर की, दूसरे देश की खोज में हैं, यहाँ परदेशी और अजनबी हैं। वे जानते थे कि उनके लिए कुछ बेहतर रखा हुआ है। और इसीलिए उन्होंने आनन्द से अपनी सारी संपत्ति लुट जाने दी क्योंकि वे जानते थे कि कुछ बेहतर आ रहा है। हम वस्तुओं से भरे हैं। हम इसे जानते हैं। और हम ऐसे शहर में रहते हैं जो कहता है जितना अधिक है उतना ही अच्छा है। परन्तु यीशु ने हमें बर्मिंघम जैसा जीवन बिताने के लिए नहीं बुलाया है। मुझे पूरा निश्चय है कि लूका 14 और इब्रानियों 11 में अपने वचन में यीशु हमें स्पष्ट रूप से बहुतायत की सांस्कृतिक मसीहियत को छोड़कर बाइबल की मसीहियत का आलिंगन करने के लिए बुला रहे हैं।

अब, कुछ लोग सोचेंगे कि यह ऐसा नहीं लगता है कि तुम हमारे शहर से प्रेम करते हो। क्या इस शहर के लोगों को यही देखने की आवश्यकता नहीं है, परमेश्वर के लोग जो सोचते है कि परमेश्वर हमारी वस्तुओं से महान है। क्या लोगों को यह देखने की जरूरत नहीं है कि उनके जीवन अनन्त काल के लिए दाव पर लगे हैं। क्या उनको यह देखने की जरूरत नहीं है कि वस्तुओं से सन्तुष्टि नहीं मिलती? यदि हमारे पास सब कुछ है और हम रविवारों को परमेश्वर की ओर फिरते हैं, तो इससे इस शहर के लोगों को क्या फर्क पड़ता है? तुम्हारे पास सब है, मेरे पास भी है। तुम्हें सब कुछ यीशु से मिलता है, मुझे सब कुछ इस तरह से मिलता है, और अन्त में हम दोनों समान हैं। नहीं, यह मसीहियत नहीं है! मसीहियत कहती है हमें वस्तुएँ नहीं चाहिए, हमें मसीह चाहिए!

अब, कुछ लोग कहते होंगे, "डेविड, क्या तुम चाहते हो कि हम सब कष्ट सहें?" नहीं। मैं चाहता हूँ हम सन्तुष्ट रहें। मैं ऐसे लोगों से बात कर रहा हूँ जो सोचते हैं कि वस्तुओं से सन्तुष्टि मिलती है लेकिन नहीं और परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर मैं हम सबको बुलाना चाहता हूँ कि हम मन फिराएँ और वस्तुओं से उस सन्तुष्टि की ओर फिरें जो मसीह में मिलती है। इब्रानियों 11:24 को देखें, *"विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना अधिक उत्तम लगा।"* पद 26, *"उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।"* क्या आपने इसे समझा? मूसा ने कहा मुझे मिस्र के सुख नहीं चाहिए। क्यों? क्योंकि मैं किसे चाहता हूँ? मैं मसीह को चाहता हूँ! और वह मिस्र के सारे सुखों से कहीं अधिक महान है।

एक मसीही के लिए "त्याग" कहना भी कठिन है, क्योंकि वास्तविकता यह है कि जब हम प्रतिफल पर विचार करते हैं तो यह त्याग जैसा लगता ही नहीं है। जब आपको मसीह मिलता है तो यह त्याग लगता ही नहीं है। उसकी महानता के प्रकाश में नहीं। यह सामान्य ज्ञान है। क्या हम बड़ा प्रतिफल चाहते हैं या छोटा प्रतिफल चाहते हैं? अभी प्रतिफल या आने वाला प्रतिफल? वह क्रूस पर इसलिए नहीं मरा कि हम इस संसार के सुखों के लिए जी सकें। उसके क्रूस पर मरने का कारण यह नहीं था। वह क्रूस पर इसलिए मरा कि हम उस दिन तक इस संसार में अजनबी और परदेशी होकर रहें जब तक हम अपने प्रतिफल के रूप में उसका अनुभव न कर लें। और वही प्रतिफल है, स्वर्ग नहीं, क्योंकि जब हम स्वर्ग के बारे में सोचते हैं, तो हम अधिक वस्तुओं के बारे में सोचते हैं, और इसी कारण स्वर्ग हमें अच्छा लगता है। नहीं, नहीं, यह धर्मशास्त्रीय नहीं है। स्वर्ग मसीह है, मसीह की भरपूरी है, मसीह की महिमा है, मसीह का आनन्द है, और हम उसे चाहते हैं, और उसके लिए हम सब कुछ त्यागने के लिए तैयार हैं।

मसीह की श्रेष्ठता...

यीशु सर्वोच्च प्रेमी है

यह बिल्कुल अलग प्रकार की मसीहियत है, इससे न चूकें। यह सर्वोच्च प्रतिफल की बुलाहट है। जब आप मसीह की श्रेष्ठता पर विचार करते हैं तो मसीही व्यक्ति का त्याग वास्तव में कोई त्याग नहीं है। यीशु श्रेष्ठ प्रेम की माँग करते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि यीशु सर्वोच्च प्रेमी हैं, क्या नहीं? यही इसकी खूबसूरती है। मैं मसीह के लिए प्रेम की तुलना में अपने पिता, अपनी माता, अपने भाई, अपनी बहन, पत्नी बच्चों को अप्रिय क्यों जानूँगा, क्योंकि यह श्रेष्ठ प्रेम है। उसके प्रति प्रेम, मेरे प्रति उसका प्रेम। यह उनके प्रति मेरे प्रेम

के तरीके को पूर्णतः बदल देता है, और मैं मसीह का आनन्द लेता हूँ और वह योग्य है। केवल वही श्रेष्ठ प्रेम के योग्य है।

हमारे पति या हमारी पत्नी श्रेष्ठ प्रेम के योग्य नहीं हैं, और हमारे बच्चे श्रेष्ठ प्रेम के योग्य नहीं हैं, और हमारे माता–पिता और हमारे भाई और हमारी बहनें और हमारे मित्र श्रेष्ठ प्रेम के योग्य नहीं हैं। मसीह, केवल मसीह श्रेष्ठ प्रेम के योग्य है। वह सर्वोच्च प्रेमी है। इसीलिए हमें रचा गया था। यही खूबसूरती है, मसीह की श्रेष्ठता।

यीशु सर्वोच्च वफादार है

और केवल प्रेम ही नहीं–जो पूर्ण वफादारी चाहता है। यीशु सर्वोच्च वफादार है। वह हमें न तो कभी छोड़ेगा और न ही त्यागेगा। हमारे जीवन उसके वायदों पर टिके हैं। यही खूबसूरती है, हमें यीशु को देने के बारे में...अपनी योजनाओं के लिए और अपने सपनों के लिए और अपनी इच्छाओं के लिए और अपनी आशाओं के लिए मरने के बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। हमारा रचयिता जानता है वह क्या कर रहा है। क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं तो हम अपनी योजनाओं को और अपनी इच्छाओं को और अपने सपनों को और आपनी आशाओं को त्याग देंगे और कहेंगे, जो कुछ आप कहेंगे मैं उसे अपना लूँगा क्योंकि मैं आप पर भरोसा करता हूँ, मैं आप पर भरोसा करता हूँ, और वह विश्वासयोग्य रहेगा, वह विश्वासयोग्य रहेगा। वह हमेशा अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य रहता है। आप अपने जीवन के बारे में अपने विचारों को आपके जीवन के बारे में अपने सृष्टिकर्ता के विचारों से बदल लें। यह एक अच्छा व्यापार है, वास्तव में अच्छा व्यापार।

यीशु ने सर्वोच्च हानि का बलिदान किया

जो पूर्ण हानि की माँग करता है वही सर्वोच्च हानि का बलिदान करता है। लूका 14 में, यरूशलेम के मार्ग पर यीशु कहते हैं... लूका की पुस्तक के सन्दर्भ में, वे क्रूस की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ वे हमारी खातिर सब कुछ खो देंगे। और हमारे लिए सब कुछ खोने का लक्ष्य है कि वह हमारा प्रतिफल बन सके। वह हमारा प्रतिफल है। यही सुसमाचार है। मैं जानता हूँ कि जब हम इनके बारे में बातें कर रहे हैं, मैं जानता हूँ कि कुछ लोग सोच रहे होंगे, "डेविड, क्या तुम नहीं जानते लोग किन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं? क्या तुम नहीं जानते लोग जूझ रहे हैं? क्या तुम नहीं जानते कि लोग अपने परिवारों में और अपने जीवनों में कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं? तो फिर तुम माता और पिता और भाई और बहन से घृणा करने के बारे में प्रचार क्यों कर रहे हो?" क्योंकि मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति इस बात को जान ले कि चाहे वे रिश्ते या

वे परिस्थितियाँ बेहतर हो जाएँ, तो भी केवल मसीह ही है जो तुम्हें सन्तुष्ट कर सकता है, केवल मसीह, केवल मसीह, केवल मसीह। और मैं परमेश्वर के वचन के अधिकार पर प्रत्येक पुरूष, स्त्री, बालक और बालिका को मसीह में उस सर्वोच्च सन्तुष्टि की ओर बुलाना चाहता हूँ।

कहीं हम ये न सोचें कि यह अत्यधिक कट्टर है। मैं नहीं जानता कि क्या मैं इसे कर सकता हूँ, सवाल यह है कि हम इसे करना क्यों नहीं चाहेंगे? सी.एस.लुईस ने कहा, "हम अधूरे मनों वाले प्राणी हैं जो पेय और काम और महत्वाकांक्षाओं में लगे हुए हैं जबकि हमें अनन्त आनन्द की पेशकश की गई है। एक अज्ञानी बच्चे के समान जो झुग्गी में मिट्टी में खेलता रहता है क्योंकि वह नहीं जानता कि समुद्र तट पर छुट्टी मनाने का क्या अर्थ है।" और वे इन शब्दों को कहते हैं जिन्होंने मेरे हृदय को बेध दिया और आशा है कि इससे आपके दिल भी छिद जाएँ। वह कहते हैं, "हम बहुत आसानी से खुश हो जाते हैं।" हाँ, यह ऐसा ही है।

हम सोचते हैं कि हमारे घर और हमारी कारें और हमारे साधन और हमारी योजनाएँ और हमारी इच्छाएँ और हमारी सुरक्षा की भावना, यह सब अच्छा है। हम झुग्गी में मिट्टी से खेल रहे हैं जबकि हमारे सामने समुद्र तट पर छुट्टी मनाने की पेशकश रखी हुई है। आइए हम इसे पीछे छोड़कर चलें। हम चलें। वह करें जो इब्रानियों 12 कहता है और अपनी आँखें विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु पर लगाएँ, और उसका पीछा करें और कहें हम उसे चाहते हैं। हाँ हम आपके चेले बनेंगे। ये यीशु की शर्तें हैं और मैं आपसे पूछता हूँ क्या आपने कभी यीशु की शर्तों को माना है? श्रेष्ठ प्रेम, पूर्ण वफादारी और पूर्ण हानि, क्या आपने अपने जीवन में यीशु की इन शर्तों को माना है? यह मूलभूत रूप से महत्वपूर्ण सवाल है। आपकी शर्तों पर नहीं, उन शर्तों पर नहीं जिन्हें आपने बनाया है, उसकी शर्तों पर।

इस पद से प्रार्थना करते समय मैं प्रभु से प्रार्थना कर रहा था कि वह मसीह की श्रेष्ठता को देखने के लिए लोगों की आँखों को खोले। वे देख सकें कि वह योग्य है। और यदि वह योग्य है तो मैं आपको बुलाना चाहता हूँ कि आप सब कुछ त्याग कर उसका आलिंगन करें, आप में से कुछ लोग पहली बार उसका आलिंगन करें। और आप में से कुछ लोगों ने अतीत में उसकी शर्तों पर उसका आलिंगन किया था लेकिन मार्ग में हम कहीं मसीह की शर्तों से भटक गए। और मैं आपको बुलाना चाहता हूँ कि एक बार फिर ताजा और नये रूप में मसीह के लिए सब कुछ त्यागकर उसे गले लगाएँ।

इसे हम केवल मसीह के आत्मा के द्वारा कर सकते हैं। आप इस प्रकार की वफादारी और इस प्रकार के प्रेम और इस प्रकार की हानि को बना नहीं सकते हैं। अतः आइए हम उसके सामने अपने मुँह के बल गिरें, और उससे कहें कि वह हमारे जीवनों को अपनी इच्छानुसार अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करे। हम अपने आप को त्यागें। हम चलते हुए मुर्दे के समान हैं और आइए हम मसीह के सामने अपने मुँह के बल गिरें और कहें हम आपको चाहते हैं, हम आपसे प्रेम करते हैं, हम आपका पीछा करते हैं और आप ही सब कुछ हैं, सब कुछ। यह खेल नहीं है, यह हमारे लिए कोई रोजमर्रा का काम नहीं है। यह जीवन है और मेरे जीवन में सब कुछ आपके ऊपर निर्भर है, और इसीलिए मैं आपकी ओर दौड़ता हूँ।

पिता, हमारी प्रार्थना है कि आप सुसमाचार के प्रतिफलों के प्रकाश में सुसमाचार की शर्तों को समझने में हमारी सहायता करें। आपके अनुग्रह के प्रकाश में जो इन सबसे बढ़कर है। परमेश्वर, हम जानते हैं कि हम में से कोई भी अपने जीवनों को, अपने साधनों को, अपनी आशाओं और अपनी योजनाओं और अपने सपनों को, अपने आप को नहीं छोड़ सकता है। जब तक आपका आत्मा हमें न जगाए, हमें अपनी ओर न खींचे तब तक हम यह नहीं कर सकते। हे परमेश्वर, हम में अपने आप को सही ठहराने की प्रवृत्ति है, हम में आपके वचनों को मुलायम करने की प्रवृत्ति है, और इसलिए उन्हें मानने के लिए हम आपके अनुग्रह के लिए प्रार्थना करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप बहुत से लोगों को पहली बार अपनी शर्तों पर मसीह की ओर खींचें। मेरी प्रार्थना है कि आज लोगों के जीवन अनन्त काल के लिए बदल जाएँ और लूका 14 के अनुसार वे पहली बार कहें, "हाँ, मैं आपका चेला बनना चाहता हूँ।" मेरी प्रार्थना है कि आप लोगों को अपनी ओर खींचें, हम जो आपके चेले हैं, हमें अपनी ओर खींचें कि मसीह में प्रतिफल के लिए हम सब कुछ त्याग दें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।